प्रश्नः

''परमेश्वर ने हर स्थानीय मण्डली को क्या अधिकार दिया?''

उत्तरः

प्रभु भोज लेने के लिए इकट्ठे हुए दो मसीही नये नियम की कलीसिया होते हैं। कई बार केवल पति और पत्नी ही (अक्विल्ला और प्रिसकिल्ला की तरह) ''कलीसिया ... जो उनके घर में है'' होते हैं (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; देखिए फिलेमोन 2)। वे ईश्वरीय आश्वासन में कि ''जहां दो या तीन'' प्रभु का नाम लेने के लिए ''इकट्ठे होते हैं'' वह वहां ''उनके बीच में होता'' है, आनन्दित होते हैं (मत्ती 18:20)।

निकोलसविले, कैंटकी में प्रभु की कलीसिया में एक मण्डली आरम्भ हो गई, जब एक मसीही स्त्री ने, जिसका पति मसीही नहीं था, प्रभु के दिन आराधना के लिए नगर की एक मसीही स्त्री को अपने घर बुलाया। दोनों इकट्ठे गीत गातीं, प्रार्थना करतीं, वचन पढ़तीं, प्रभु भोज लेतीं और हर हफ़्ते अपनी भेंटें बचाकर रखतीं। इन दोनों स्त्रियों का समर्पण निकोलसविले में आज की बहुत बड़ी, मिशनरी सोच वाली मण्डली आरम्भ होने का कारण बना।

नये नियम की कोई कलीसिया इसकी शिक्षा के विषय में ''ऐसा ही कहती'' नहीं कहती, क्योंकि इसकी शिक्षा स्पष्ट तौर पर ''प्रेरितों की शिक्षा'' (प्रेरितों 2:42) है। प्रेरितों की शिक्षा की योजना ''स्वर्ग'' में बनी थी और वे बारह केवल उसे लोगों को सुनाने वाले ही थे। यीशु ने उन्हें बताया था: ''मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा [यू.: *estai dedemena*] और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा [यू: *estai lelumena*]'' (मत्ती 18:18)।

उनकी बातों का इतना महत्व था कि उन्हें ''मसीह के राजदूत'' कहा जाता था (2 कुरिन्थियों 5:20)। उन्हें ''बारह सिंहासनों पर'' बैठने वालों के रूप में दिखाया जाता था (मत्ती 19:28)।

इन बारह प्रेरितों का अधिकार 30 ईस्वी में पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम से आरज़्भ हुआ। यह केवल इन बारह की मृत्यु तक ही नहीं बल्कि ''जगत के अन्त तक'' (मज़्ी 28:20) रहना था।

किसी भी शिक्षा के विषय में, हर मसीही को मालूम है कि ''सत्य के आत्मा और झूठ के आत्मा'' में कैसे अन्तर करना है: उसे केवल यही पूछने की आवश्यकता है, ''ज़्या यह प्रेरितों की शिक्षा है ?'' एक प्रेरित ने लिखा है कि, ''जो परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है'' और ''जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता'' (1 यूहन्ना 4:6)।

पौलुस ने कहा, ''जितने इस नियम पर चलेंगे (यू.: *kanon,* अर्थात प्रेरिताई के ''सिद्धांत'' पर) उन पर, परमेश्वर के इस्राएल पर, शांति और दया होती रहे'' (गलातियों 6:16)। प्राचीनों के बिना हो या प्राचीनों वाली मण्डली को सतर्क रहने के लिए कहा गया है, ताकि प्रेरितों की शिक्षा के अलावा कोई दूसरी शिक्षा कलीसिया में न आ जाए। पतरस ने चेतावनी दी, ''तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे'' (2 पतरस 2:1)। इसी कारण पौलुस ने लिखा, ''अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो'' (रोमियों 16:17)।

हर मण्डली को अपने मामलों को देखने के लिए, स्वायज़ होने के लिए अपना प्रबन्ध आप करने के लिए प्रेरितों की ओर से अधिकार है। प्रेरितों ने ऐल्डर चुने जाने से पहले ही यरूशलेम की कलीसिया के अपना प्रबन्ध आप करने के सिद्धांत को पहचान लिया था। एक आपात स्थिति पैदा हो गई थी इस कारण एक कमेटी बनाने की आवश्यकता पड़ी। उन बारह सुसमाचार प्रचारकों अर्थात इवेंजलिस्टों (जो बारह प्रेरित भी थे) के होने के बावजूद, उन सुसमाचार प्रचारकों ने अपने आप को कलीसिया का अधिकारी नहीं समझा। उन्होंने स्थानी स्वायतता का सज़्मान किया।,

परमेश्वर की प्रेरणा से उनकी आज्ञा ''चेलों की मण्डली'' द्वारा अपने लिए उस कमेटी के लिए पुरुषों को ''चुनना'' (यू.: *episkeptomai,* जिसका अर्थ ''निकाल लें'' है) थी। फिर सुसमाचार के उन प्रचारकों ने ''इस काम के'' लिए चुने हुओं को नियुज़्त करना (यू.: *kathistemi,* जिसका अर्थ ''अधिकरी बनाना'' है) था (प्रेरितों 6:2,3)।

''सामान्य सदस्यों'' (जैसा कि गलती से उन्हें आज कहा जाता है) ने ही चयन किया। उन्होंने यह चयन कैसे किया, इसका विवरण नहीं दिया गया। वोट डालने से या किसी और ढंग से, पर वे नये नियम की कलीसिया के अपना प्रबन्ध आप करने के सिद्धांत का पालन कर रहे थे।

लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया की मण्डलियों में दो सुसमाचार प्रचारकों, पौलुस और बरनबास ने ''हर कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए'' (प्रेरितों 14:23)। पौलुस और बरनबास ने उन प्राचीनों या ऐल्डरों को चुना नहीं था बल्कि केवल उन्हें नियुज़्त किया था। लूका के शज़्द, *cheirotoneo* (*cheir* अर्थात ''हाथ'' और *teino* अर्थात ''फैलाना'' से), जो किसी के नाम की स्वीकृति का संदेश देने के लिए हाथ उठाने का सुझाव देता है, से यह तथ्य स्पष्ट है। फिर तो, यह चयन कलीसिया द्वारा ''वोट डालकर'' किया गया था।

परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लूका का संदेश दिखाता है कि पौलुस और बरनबास ने सदस्यों को चुनने का अधिकार देकर स्थानीय कलीसिया के अपना प्रबन्ध आप करने को महत्व दिया था। उसके बाद, इन दोनों सुसमाचार प्रचारकों ने चुने हुए लोगों को ऐल्डर नियुक़्त कर दिया था।

इसी प्रकार, क्रेते के टापू पर कलीसियाओं में जाने वाले सुसमाचार प्रचारक तीतुस ने पौलुस से ऐल्डर बनाने के लिए पुरुषों को चुनने (''यू.: *episkeptomai*'') की आज्ञा नहीं पाई थी। बल्कि उसने उन्हें ''नियुक़्त'' करना (यू.: *kathistemi*) या ठहराना था (तीतुस 1:5)।

पौलुस ने उसी यूनानी शब़्द का इस्तेमाल किया जिसका इस्तेमाल सेवा करने के लिए बनाई गई कमेटी के लिए पुरुषों को नियुक़्त करने के समय यरूशलेम में प्रेरितों ने किया था (प्रेरितों 6:2, 3)। यदि इसी ढंग को अपनाया गया हो, तो क्रेते की कलीसियाओं ने ऐल्डर बनने वालों को चुना होगा और तीतुस ने उन्हें उनके काम के लिए नियुक़्त कर दिया होगा। तीतुस जैसे बाहर से आने वाले व्यक़्ति द्वारा नाम बताने के बजाय उन्हें अपने बीच में से उन लोगों को चुनने का जिन्हें वे अच्छी तरह जानते थे, कोई अर्थ होगा।

ऊपर दिए गए उदाहरण उस शिक्षा की गलती दिखाते हैं कि ऐल्डरों के बिना मण्डली ''सुसमाचार सुनाने वाले की देख-रेख'' में होनी चाहिए। बाइबल के अनुसार सुसमाचार प्रचारकों को कोई अधिकार नहीं है। उन्हें केवल यही अधिकार है कि वे प्रेरितों की शिक्षा का फिर से प्रचार करें।

क़्योंकि पौलुस ने कहा कि क्रेते के टापू पर किया गया तीतुस का प्रचार ''पूरे अधिकार के साथ'' (तीतुस 2:15) था इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि तीतुस को उस टापू की सारी कलीसियाओं पर अधिकार दिया गया था। उस सुसमाचार प्रचारक के पास ''पूरा अधिकार'' इसी अर्थ में होगा कि वह सिखाने में गलती केवल तभी नहीं कर सकता यदि उस पर प्रेरितों ने हाथ रखें हों (देखिए प्रेरितों 8:18)।

क़्योंकि हम जानते हैं कि पौलुस ने सुसमाचार सुनाने वाले तीमुथियुस पर अपने हाथ रखे थे (2 तीमुथियुस 1:6) इसलिए यह सोचना व्यर्थ है कि पौलुस ने तीतुस को अपने हाथ रखे बिना क्रेते की कलीसियाओं में छोड़ दिया हो। तीतुस के लिए पौलुस द्वारा हाथ रखकर आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य दिए बिना ''पूरा अधिकार'' होना असज़्भव था।

ऐल्डरों की नियुक़्ति के बाद भी स्थानीय कलीसिया में होने वाला पहला अधिकार स्थानीय कलीसिया में ही होता है। इसी प्रकार, अपने ऐल्डर चुनने के लिए कलीसिया का अधिकार अविश्वासी ऐल्डरों को निकालने के अधिकार के साथ चलता है।

पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को चेतावनी दी, ''... तुज़्हारे ही बीच में से ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितों 20:29, 30)। ''दो या तीन गवाहों'' द्वारा ''किसी प्राचीन पर'' दोष लगाने से ''सबके सामने समझा'' देना आवश्यक था (1 तीमुथियुस 5:19, 20)।

यह कहने का कोई अर्थ नहीं होगा कि किसी अविश्वासी ऐल्डर को निकाला नहीं जा

सकता। निश्चित तौर पर कलीसिया का अधिकार जिससे उसे अगुआ बनाया गया था उसे निकालने की सामर्थ भी है।

ऐल्डरों की नियुक्ति हुई हो या न, हर स्थानीय कलीसिया में अपना प्रबन्ध आप करने से सदस्यों को ''इकट्ठे'' होकर संगति से ''कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल'' देने की अनुमति मिलती है (1 कुरिन्थियों 5:4, 13)। मसीही लोगों को ''हर एक ऐसे भाई से अलग'' रहना चाहिए जो ''अनुचित चाल चलता'' हो (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)।

इसी प्रकार, दिन-ब-दिन मण्डली के काम, जितनी देर तक प्रेरितों की शिक्षा के साथ मेल खाते हैं, वे केवल स्थानीय कलीसिया के निर्णय से ही होते हैं। प्रेरितों की शिक्षा एक सभा की बात करती है (इब्रानियों 10:25), पर यह स्पष्ट नहीं बताती कि यह सभा किसी के घर में, किराए के हॉल में, या कलीसिया के भवन में होनी चाहिए। स्थानीय सदस्यों को यह फैसला लेना होता है।

प्रेरितों की शिक्षा ''एक दूसरे'' के सामने और ''परमेश्वर के लिए'' ''आत्मिक गीत'' गाने के बारे में स्पष्ट है (कुलुस्सियों 3:16)। गाने की कौन सी पुस्तक इस्तेमाल करनी है और गीतों में कौन अगुआई करेगा, ये सब स्थानीय निर्णय हैं।

प्रेरितों की शिक्षा वचन में से पढ़ने (कुलुस्सियों 4:16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27) और एक दूसरे के सुधार (1 थिस्सलुनीकियों 5:11) के सञ्बन्ध में स्पष्ट है। इसलिए हमारी मसीही सभाओं में इन सभी कार्यों को शामिल करना आवश्यक है, परन्तु ये कार्य सभाओं में कितनी देर रहेंगे, इसका निर्णय स्थानीय कलीसिया को लेना है।

प्रेरितों की शिक्षा में हर मसीही से ''उसकी आमदनी के अनुसार'' सप्ताह के पहले दिन चंदा देने की शिक्षा स्पष्ट है (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। इसके अलावा, हमें विशेष चंदा इकट्ठा करने की अनुमति का उदाहरण भी मिलता है (प्रेरितों 11:27-30)। प्रेरितों के समय में ये चंदे मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि दो प्रसिद्ध उद्देश्यों के लिए लिए जाते थे: धर्मार्थ राहत के लिए (प्रेरितों 24:17; रोमियों 15:25; 2 कुरिन्थियों 8:1-5; गलतियों 2:10) और सुसमाचार के प्रचार के लिए (1 कुरिन्थियों 9:14; फिलिप्पियों 4:14-16)।

प्रभु भोज लेना प्रेरितों की एक शिक्षा है, पर इसके लेने के समय को सपष्ट नहीं बताया गया। परन्तु ज़्योंकि ''सप्ताह के पहले दिन ... रोटी तोड़ने के लिए'' मण्डली के इकट्ठा होने का एक स्वीकृत उदाहरण (जिसमें एक प्रेरित भी उपस्थित था) (प्रेरितों 20:7) होने के कारण, समझदार मसीही आज भी वैसा ही करते हैं।

सोमवार से शनिवार तक, मसीही लोगों को ''ज्यों ज्यों उस दिन [अर्थात प्रभु के दिन] को निकट आते'' देखते हैं, ''एक दूसरे को समझाते'' देखा जा सकता है (इब्रानियों 10:25)। प्रेम करने वाले मसीही इकट्ठे होने को आनन्दपूर्ण समय के रूप में देखते हैं जहां वे अपने सृष्टिकर्ज़ा और उद्धारकर्ज़ा और पवित्र आत्मा का आराधना में और एक दूसरे को सुधारते हुए धन्यवाद कर सकें (यूहन्ना 4:24; 1 थिस्सलुनीकियों 5:11)। एक मसीही व्यज़्ति भजन संहिता 122:1 की बात कह सकता है, ''जब लोगों ने मुझसे कहा, कि हम यहोवा के भवन को चले, तब मैं आनन्दित हुआ।'' जो कुछ स्वर्ग ने उसके लिए किया है

उसके लिए वह बहुत ही आभारी है और उसे लगता है कि इसे इस प्रकार कहा जाए:

> जैसे हरिणी नदी के जल के लिए हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए हांफता हूं। जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा? मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है? मैं भीड़ के संग जाया करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करने वाली भीड़ के बची में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है (42:1–4)।

बपतिस्मा: एक विभाजक रेखा

बपतिस्मे से पहले		**बपतिस्मे के बाद**
पापों का दोष	मत्ती 28:18–20; मर. 16:15–18; लूका 24:46–49	पापों की क्षमा
बिना उद्धार के	मर. 16:16; 1 पत. 3:21	उद्धार पाए हुए
पाप धोए नहीं गए	प्रेरितों 22:16	पाप धोए गए
पवित्र आत्मा का कोई दान नहीं	यू. 14:17; प्रेरितों 2:38; 5:32; गला. 4:6; इफि. 1:13, 14	पवित्र आत्मा का दान हमारी मीरास का सबूत
शैतान की संतान	यू. 8:44; 2 कुरिं. 6:16	परमेश्वर की संतान
मसीह में नहीं	रोमि. 6:3; गला. 3:27	मसीह में
परमेश्वर के राज्य में नहीं	यू. 3:5; कुलु. 1:13	परमेश्वर के राज्य में
''एक देह'' अर्थात कलीसिया में नहीं	1 कुरिं. 12:13; इफि. 1:22, 23	अब ''एक देह'' अर्थात कलीसिया में
जिन्हें सब प्रकार की आत्मिक आशिषें नहीं मिलीं	इफि. 1:3	जिनके पास सब प्रकार की आत्मिक आशिषें हैं
जिन्हें भरपूरी का जीवन नहीं मिला	यू. 10:10	जिनके पास भरपूरी का जीवन है
जिनके पास स्वर्ग में मीरास नहीं है	1 पत. 1:4	जिन्हें स्वर्ग में मीरास मिली है